हरिसंगत

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

गुरसिख मिल गुरसंगत कहीए। गुरसंगत मिल सोहँ शब्द गुण गाईए। सोहँ शब्द रसन आत्म जोत जगाईए। वज्जे धुन आत्म सुण, सुन ना सहीए। महाराज शेर सिँघ गुण, सद रसना गाईए। (०१—१३८)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

मिल गुरसिख सच मार्ग आईए। माण देवे प्रभ गुरमुख, जिस रसना सोहँ गाईए। कर दर्शन उतरे भुक्ख, प्रभ अबिनाशी घर माहि पाईए। सुफल कराईए माता दी कुक्ख, संगत जो रल जाईए। महाराज शेर सिँघ ना होए बेमुख, चरन लाग तर जाईए। (०१—१७६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

गुरसंगत वड्डी वड्डिआई विच्च संसार है। सारे रल मिल बहिणा भैणा भाई, ना बणना जीव गवार है। (०४ ६५)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

जगत बुद्धि लोचे जग, जग जीवण नज़र किसे ना आईआ। सोचां अन्दर लग्गी अग्ग, शाह रग उप्पर दरस कोई ना पाईआ। हउमे हंगता विच्च गए बज्झ, टिकण ना

देवे जगत चतुराईआ। जिन्नां मिल्या साहिब सतिगुर समरथ, गुर शब्दी मेल मिलाईआ। उह उच्ची कूकण दोवें कर के हत्थ, जीव जंत सर्ब समझाईआ। किसे कम्म ना औणी बुध मत, अग्गे होए ना कोई सहाईआ। लेखे लाओ आपणी रत, प्रभ चरन मिले वडयाईआ। धंन्धयां विच्च गाओ जस, बन्दयां विच्चों बन्दगी इक्को भाईआ। गन्दयां विच्चों पिच्छे जाओ हट, पल्लू आपणा आप छुडाईआ। मन नीवां कर के जाओ ढठ्ठ, ढठ्ठयां लज्जया कोई ना आईआ। माणस देही साचा सौदा दमड़े लउ वट्ट, काची माटी अन्त कम्म किसे ना आईआ । पढ़ पढ़ सटीक रसना जिह्वा रहे रट, रट्टा आवण जावण ना कोई मुकाईआ। सतिगुर मार्ग रिहा दस्स, नानक गोबिन्द शब्द पढ़ाईआ । जिन्नां पारब्रह्म प्रभ होया वस, तिन्नां निउँ निउँ चरन लागे सर्ब लोकाईआ । भगत भगवान इक्क दूजे दा गावण जस, दूजी अवर ना कोई पढ़ाईआ। गुरमुखां कोल चौदां विद्या होई भट्ठ, इक्को अक्खर मिले वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख अपरंपर स्वामी आदि जुगादि लक्ख चुरासी घट घट अन्तरजामी, बोध अगाध शब्द बाणी, गुर बाणी राग अलाईआ। (१४—४१६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

रक्ख रक्ख रक्ख पत रक्ख, तेरी सरनाई। दे दरस समरथ, प्रभ दया कमाई। गुरसिखां दर्शन उत्तम वथ्थ, कर दरस तृखा बुझाई। सृष्ट सबाई लथ्थी सथ्थ, शब्द तेरा गुर कलम बणाई। बेमुखां नक्क पाई नत्थ, धर्म राए दे सजाई। साध संगत उत्ते मेरा हत्थ, चरन आ मिले वड्डिआई। महाराज शेर सिँघ प्रगट समरथ, झूठे धंदे जगत लगाई।(०१—१५६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

संगत साची जाणीए, जिस अन्तर हरि निवास। संगत साची जाणीए, जिस आत्म सच धरवास। संगत साची जाणीए, जिस प्रभ मिलण दी आस। संगत साची जाणीए, जिस देवे दरस पुरख अबिनाश। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे खेले खेल तमाश ।

संगत साची जाणीए, आत्म अन्तर रंग। संगत साची जाणीए, घर वेखे सेज पलँघ । संगत साची जाणीए, घर सुणे नाद मरदगँ। संगत साची जाणीए, आपणा दवारा आपे जाए लघँ। संगत साची जाणीए, अठ्ठे पहर रहे परमानन्द। संगत साची जाणीए, जिस सतिगुर सुणाए सुहागी छन्द। संगत साची जाणीए, जिस अन्त ना आए कंड। संगत साची जाणीए, जो वसे उप्पर ब्रह्मण्ड। संगत साची जाणीए, जित आत्म होए ना रंड। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद वसे संगत संग।

संगत सदा खुशी मनाए, दिवस रैण वडयाईआ। गीत गोबिन्द हरि गुण गाए, रसना जेहवा सेव कमाईआ। मन तन हरया जगत कराए, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। हरख़

सोग विच्च कदे ना आए, सो संगत सतिगुर भाईआ। संगत सतिगुर आप बणाए, देवे माण माण वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची संगत सिख रूप रखवाईआ ।

साची संगत सो प्रधान, जो मन्ने धुर फ़रमाना। पंगत बणे फेर विच्च जहान, पुरख अबिनाशी होए मेहरवाना। मरे आए ना कोई मुकाण, गाए गोबिन्द गाणा। घर आई वेखे संगत जहान, की वरतिआ कलिजुग भाणा। गुरदयाल सिँघ तेरा रिध्धा पक्का सारे खाण, नाल मिल्या श्री भगवाना। पंगत बणी चतुर सुजान, मूर्ख मुगध नैण शरमाना। पिछली चले ना कोई दुकान, अग्गे खेल करे हो मेहरवाना । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संगत पंगत पंगत संगत हरख़ सोग चिन्ता दुःख सर्ब मिटाना। (१०—८२५)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

हरिसंगत बण के सभ ने बहिणा, गुरमत मिले वडयाईआ । दर्शन करो आपणे नैणां, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। गुर नानक गोबिन्द मन्नो कहणा , क्यों बैठे मनों भुलाईआ। आत्म परमात्म लहणा देणा, जुग जुग वज्जे वधाईआ। सो पुरख निरञ्जण साक सज्जण सैणा, इक्क इकल्ला होए सहाईआ। सच दुआरे इक्ठे रहणा, दूई नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक्क सुणाईआ।

हरिसंगत मेला इक्क घर, घर साचे वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी मिले हरि, गृह मन्दर फेरा पाईआ। इक्क दूजे नाल क्यों रहे लड़, मनमत करे लड़ाईआ। गुर शब्द डोरी लउ फड़, मनमती दिउ तजाईआ। साचे पौड़े जाओ चढ़, सतिगुर नानक गिआ समझाईआ । जींवदिआं ही जाओ मर, मरनी इक्को इक्क दरसाईआ। आपणी सुरती शब्द डोरे लउ फड़, मन वासना उठ ना दह दिश धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमत इक्क वखाईआ।

गुरमत वेख सज्जण सुहेले, सो सज्जण आप जणाइंदा । आत्म परमात्म जुग जुग मेले, जुग करता आप जणाइंदा। प्रभ दे नाम जपण तों जेहड़े वेहले, ओनां झगढ़े विच्च रखवाइंदा। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेले, गुरमुख मनमुख दोवें धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत निरञ्जण आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म चढ़ाए साचे तेले, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी घर साचे सगन मनाइंदा। .... (१४ —१७०)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

संगत सतिगुर आप बणाई। गुर संगत विच्च भेद ना काई । (०१—००२)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

हरिसंगत सुणना कन्न ला, एका एक एक जणाईआ। गुर शब्द बणौणा जगत मलाह, दूजा दर ना मंगण जाईआ। हरि का नाउँ सच सलाह, सिफ्त सालाही इक्क अखवाईआ। रसना गाओ थां थां, भुल्ल कदे ना जाईआ। पुरख अकाल लैणा मना, दूजा इष्ट ना कोई मनाईआ। आदि जुगादी बणे पिता मां, गुरसिख बाल अंञाणे गोद उठाईआ। चार वरन बणना भैण भरा, नेत्र नैण ना कोई तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दए समझाईआ।

हरिसंगत सति करो ध्यान, एका शब्द जणाइंदा। आत्म अन्तर इक्क ज्ञान, एका एक रूप नज़री आइंदा। हर घट वसे हरि भगवान, घट घट आपणी जोत जगाइंदा। ऊँचां नीचां राओ रंकां देवे माण, जो जन रसना गाइंदा। एथ्थे ओथ्थे होए सहाई आण, भुल्ल कदे ना जाइंदा। गुर शब्द सदा बलवान, जुग जुग सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत सति वडिआइंदा।

हरिसंगत सति विचार, सति सन्तोख दए जणाईआ। काम क्रोध हँकार लोभ मोह दए निवार, जूठ झूठ रहण ना पाईआ। साचे शब्द करना इक्क प्यार, घर वज्जदी रहे वधाईआ। अठ्ठे पहर रहे धुनकार, आत्म धुन सच्ची शनवाईआ। काया मन्दर अन्दर बैठा मीत मुरार, अठ्ठे पहिर राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या सिख समझाईआ।

साची सिख्या गुर विचार, गुरमुखां बूझ बुझाइंदा। सृष्ट सबाई वेखे संसार, थिर कोई रहण ना पाइंदा। एका मिलणा एकँकार, एका घर हरि सुहाइंदा। नाता तोड़ जगत विकार, आत्म धार इक्क दरसाइंदा। रसना गौणा वारो वार, रसना जिह्वा गुण इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची संगत साचा तत्त इक्क वखाइंदा।

साचा तत्त शब्द गुर ज्ञान, गहर गम्भीर वड्डी वडयाईआ। मूर्ख मूड़ बणाए चतर सुजान, जो जन बैठे ध्यान लगाईआ। घर घर दर्शन देवे आण, दासी दास सेव कमाईआ। भगवन्त भगत लए पछाण, जुगा जुगन्तर वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत एका गुण जणाईआ। हरिसंगत तेरी वड्डिआई वड, हरि सतिगुर आप कराइंदा। (१०—८१)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

हरि सन्त हरि नाउँ है, पंज तत्त ना मूल। किसे नगर ना वसे शहिर गराउँ है, गुरसिख ना जाणा भूल। हरि शब्द फड़े बाहों है, आदि अन्त चुकाए मूल। जिह्वा कुरलाए ना कोई काउँ है, इक्क पंघूड़ा रिहा झूल। करनहारा सच निआउँ है, प्रभ साचा कन्त कन्तूहल। आपे पिता आपे मांउँ है, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरसिख खिलाए कवण फूल। (६—२०५)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

बिआस कहे मैं परेशान हो के दोवें हत्थ बद्धे, निउँ के वास्ता पाईआ। साहिब सतिगुर तैनूं केहड़े लग्गदे चंगे, मैनूं दे समझाईआ । की जेहड़े नहौंदे विच्च गंगे, सुरसती जमना तारीआं लाईआ। गोबिन्द किहा बिन मेरे प्यार सारे गंदे, नहावण धोवण कम्म किसे ना आईआ। जेहड़े महब्बत विच्च रंगे, कदे ना होवण नंगे मंदयां दे मंदे आपणे घर वसाईआ। (२०—१६५)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

आओ भगतो सचखण्ड वासीओ, हरि साचा सच बुलाइंदा। आओ कट्टों जम की फासीओ, फांदी फंद आप मिटाइंदा। आओ मण्डल बह बह पाउ रासीओ, हरि साची रास आप रचाइंदा। आओ धक्का देवो पंडत कांसीउ, जगत विद्या मूल चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे भगत आप बुलाइंदा । १०—१०७१)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

हरिसंगत सेवा साचा मूल, अनमुल आप जणाइंदा। प्रेम प्यार दे बरखो फूल, दूजी मंग ना कोई मंगाइंदा। कूड़ी क्रिया कांटा चुभौणी ना कोई त्रिसूल, त्रैगुण सूल आप जणाइंदा । गुरसिख गुरसिख दी चुग़ली निन्दया ना करनी भूल, सच सुच्च झोली पाइंदा। प्रभ मिलण दा इक्को असूल, गुरसिख असलीयत रूप वटाइंदा। जो सतिगुर बचन करे कबूल, सो गुरसिख हरिसंगत सेव कमाइंदा। सतिगुर लहणा देणा चुकावे मूल, अगला पिछला लेखा झोली पाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दी सच प्रीती, प्रेम प्यार दी इक्को रीती, जीवण जुगत दी सच्ची नीती, इक्को रंग वेखणा हस्त कीटी, ऊँच नीच भेव ना कोई रखाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच प्रीती इक्क दरसाइंदा । (१३ —६६६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

जन भगत कहण प्रभू तेरा केहड़ा संगी, चार कुण्ट दह दिशा नज़र कोई ना आईआ । प्यार मुहब्बत तैनूं देवे कोई ना मंगी, खाली फिरें थाउँ थाईंआ। पुरख अकाल मैं किहा भगतो बड़ा ढंगी, तरा तरीका आपणे हत्थ रखाईआ। सारी दुनियां नालों मैनूं थोड़ी सिक्खी चंगी, जो सिख्या विच्च रखाईआ। नाता तोड़ के ख़ाना बन्दी, बन्दगी वाले बन्दे लवां उपजाईआ। जिनां दे अन्तर कूड़ वासना रहे ना गंदी, सुगंधी नाम दिआं भराईआ। माण दे के विच्च वरभंडी, ब्रह्मण्डी करां रुशनाईआ । पन्ध मुका के जेरज अंडी, उत्भुज सेतज खैहड़ा दिआं छुडाईआ । सच प्रेम दा दे के इक्क अनन्दी, अनन्द अनन्द विच्च टिकाईआ। साचा सोहला दस्स के छन्दी, अगम्म अथाह करां पढ़ाईआ। भगत सुहेले बणा के आप

भुयंगी, भुजां तों लवां उठाईआ। सिध्धा मार्ग दस के डण्डी, डण्डौत इक्को दिआं जणाईआ। जन भगतो तुहाढ्ढी आत्मा कदे ना रहे रंडी, परमात्म हो के कन्त सुहागी लए परनाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि दीन दयाल सदा बख्शंदी, बख्शश रहमत आप कमाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, वस्त अमोलक देवे बिना मूंहों मंगी, अनडिठड़ी दौलत आप वरताईआ । (१६—२६३)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

सो वड्डा जिस प्रभ जोत जगाए। सो वड्डा जिस भरम चुकाए। सो वड्डा जिस सोहँ शब्द सुणाए। सो वड्डा जिस गोझ ज्ञान खुल्ह़ाए। सो वड्डा जिस रंगण नाम चढ़ाए। सो वड्डा जिस प्रभ दरस दिखाए। सो वड्डा जिस प्रभ चरनीं लाए। सो वड्डा जिस जन्म जन्म दी सोझी पाए। सो वड्डा जिस भिख्खया नाम दी पाए। सो वड्डा जिस प्रभ कर्म कमाए। सो वड्डा जिस नर नरायण माण दवाए। सो वड्डा जो संगत रल जाए। सो वड्डा जो चरन कँवल विच्च सेव कमाए। सो वड्डा जिस महाराज शेर सिँघ सिर हत्थ रखाए। (५ जेठ—२००७ बि)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

पूरब लहणा जिस जन लैणा। गुर संगत रल के साची बहिणा। प्रभ दरस दिखाऐ तीजे नैणा। दूई द्वैती परदे लाहे, गुर संगत बणाए भाई भैणा। एका रंग हरि रंगाए, दूजा आपणा संग निभाए, जो चले हरि का कहणा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे सन्त जनां, आप बणे मात पित, करे साचा हित, नित नवित्त राखो, चित वड्डा साक सज्जण सैणा ।

रक्खणा चित्त चितारना। प्रभ अबिनाशी साचा मित, ना कदे विसारना। ना कोई वेला वार थित, सोहँ शब्द सद रसन विचारना। आपे बणे साचा मित, करे साचा हित, मानस जन्म जाणा जित्त, लक्ख चुरासी गेड़ निवारना। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अन्तम वेला कलिजुग नेड़े आया, बेमुखां दर दुरकारना। (६ चेत २०११ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

हरिसंगत हरि रत्त है, साची रत्त उपाए। आपे दे समझावे मत है, एका बूझ बुझाए। आप रखाए एका तत्त है, इक्क ज्ञान दृढ़ाए। इक्क रखाए धीरज जत है, सति सन्तोख समाए। एका तीर्थ तट्ट है, पार किनारा इक्क वखाए। एका साचा हट्ट है, एका वणज कराए। एका खेल बाज़ीगर नट है, हरि साचा आप कराए। एका जोती लट लट है, एका घर जगाए। एका वसे घट घट है, घट घट डेरा लाए। एका काया मट है, एका रंग रंगाए। एका नाम एका रसना रही रट है, एका एक अलाए। एका मैल रिहा कट्ट

है, एका रोग गवाए। एका मारे साची सट्ट है, एका ताल वजाए। एका मन्दर जाए ढठ्ठ है, एका बणत बणाए। एका अगनी मठ है, एका रिहा तपाए। एका तीर्थ अठ्ठ सठ है, एका माण रखवाए। एका किनारा गोदावरी तट्ट है, आपणा आप उपाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत हरि समाए।

हरिसंगत हरि समाया, आपणी जोत जगा। मूर्ख मूढ़े गले लगाया, फड़ फड़ पाए राह। चरन धूढ़ी टिक्का लाया, रसन जपाए नां। नाता कूड़ो कूड़ी तोड़ तुड़ाया, इक्क वखाए साचा थां। काया गूढ़ी रंग चढ़ाया, हँस बणाए कां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे ठंडी छाँ।

हरिसंगत हरि रचया, रचणहार करतारा। हरि वेखे भाण्डा कच्चया, परखे परखणहारा । मन कलंदर घट घट नच्चया, खेले खेल जगत दवारा। गुरमुख मेला साजन सच्चया, घर साचे इक्क मनारा। ना पक्का ना कच्चया, ना इट्टा ना गारा। ना दरवाज़ा कोई रक्खया, कीआ बन्द किवाड़ा। ग़रीब निवाज़ा आपे वस्सया, आपणी किरपा धारा। आपणे मन्दर आपे हस्सया, गुरमुखां करे प्यारा। राह साचा एका दस्सया, गुर चरन साचा गुरदवारा। मिटे रैण अन्धेरी शामा मस्सया, ना दिसे धूंआंधारा । तीर निराला एका कस्सया, कलिजुग तेरी अन्तम वारा। धुरदरगाही आया नस्सया, लोकमात लए उभारा। कोटन कोट करे प्रकाश रव ससिआ, गुरमुख साचे कर प्यारा। हरिसंगत हरि हिरदे अंदर वस्सया, जिस जन देवे नाम अधारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सच प्यारा।

हरिसंगत हरि नाम जपा, आपणा जाप जपाया। तीनो ताप दए मिटा, दरगाह साची धाम सुहाया। नैणां रोग दए गवा, हउमे हंगता मेल मिलाया। साची संगता दए बणा, जो जन दवारे आया। भुक्खा नंगता राज राजान शाह सुलतान एका धाम सुहा, ऊँचां नीचां गले लगाईआ। आपे मंगता होए दो जहानां, गुरमुखां दर दवारे फेरी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराया।

हरिसंगत हरि साचा साजन, दो जहाना वाली। पारब्रह्म वड राज राजन, खेले खेल निराली। कलिजुग अन्तम रचिआ काजन, चले चाल निराली। जोती जामा देस माझन, दीपक जगे जोत दिवाली । आप आपणा साजिआ साजन, आपणी आप करे रखवाली। आपे चढ़या साचे ताजन, आपे चाल चले निराली। आपे मारनहारा वाजन, गुरमुख साचे आप उठाली। अन्तम वेले रक्खण लाजन, हरि जोती नूर अकाली। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत संग निभाली।

हरिसंगत हरि संग निभावणा, आपणा रंग रंगाया। एका मार्ग मात लावणा, एका थान मिलाया। एका नाद हरि वजावणा, एका घर सुहाया। एका राग रसन अलावणा, एका

धुन उपजाया। एका माघ मज़न नुहावना, अठसठ माण गवाया। एका सज्जण सच अखवावणा, जगत ठग्गण आपे आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत वेख वखावणा।

हरिसंगत हरि नेत्र वेख, हरिजन दए वडयाईआ। लिखणहारा आपे लेख, आपे मेट मिटाईआ। नेत्र लोचण आपे पेख, सगली चिन्द मिटाईआ। जोधा सूर नर नरेश, महिमा अगणत ना कोई गणाईआ। हरिजन दवारे सदा दरवेश, रिहा अलक्ख जगाईआ। आपे होया दस दसमेस, आपणी धार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत जोग कमाईआ।

हरिसंगत हरि साचा जोग, एका एक रखाइंदा। एका रस एका भोग, एका वेख वखाइंदा । एका लेखा धुर संजोग, एका मेल मिलाइंदा। एका कट्टे हउमे रोग, एका वेख वखाइंदा। एका देवे दरस अमोघ, एका नूर उपाइंदा। ना कोई हरख़ ना कोई सोग, आलस निंदरा विच्च ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत वेख वखाइंदा ।

हरिसंगत हरि नाता जोड़, साचा जोड़ जुड़ाया। इक्क चढ़ाए आपणे घोड़, आपे रिहा दौड़ाया। आप लगाया आपणा पौड़, डण्डा आपणे हत्थ रखाया। ब्रह्मण्डा वेखे मिट्ठा कौड़, लक्ख चुरासी वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत फासी कट वखाया।

हरिसंगत हरि कट्टे फाह, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। एका मिल्या सच मलाह, गुर गोबिन्द संग रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, परम पुरख अखवाईआ। गोतम नारी लए तरा, सती अहल्या पार कराईआ। लोकमाती जोत जगा, गुरमुख सुरती नाउँ रखाईआ। राम रामा देवे चरन छुहा, आपणी दया कमाईआ। सर सरोवर तट्ट किनारे बजर कपाटी सिला दए तुड़ा, आपे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत जोत करे रुशनाईआ।

हरिसंगत जगमगा, एका नूर करे उजिआरा। एका जोती दीप जगा, खेले खेल विच्च संसारा। एका गोती दए बणा, चार वरनां इक्क प्यारा। एका सोटी हत्थ उठा, नाम खण्डा दो धारा। साधां सन्तां धीरज जत लंगोटी दए तुड़ा, ना दिसे कोई सहारा। कोटन कोटी लए उठा, निउली कर्म आसण करन जग भारा। कोटन कोटी लए हला, जो लटके मूंह दे भारा। कोटन कोटी वेख वखा, तीर्थ तट्टां पावे सारा। कोटन कोटी देवे मेट मिटा, लक्ख चुरासी पार किनारा। गुरमुख चोटी दए चढ़ा, दस्म दवारी सच घर बारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत सुहाए इक्क दवारा।

इक दवार एका घर, एका कमलापाती। एका नारी एका नर, एका दीवा बाती। एका सरोवर एका सर, एका नहावण नाती। एका हरी एका हरि, इक्क चढ़ाए साची घाटी। एका तरनी एका तर, एका तीर्थ ताटी। एका मरनी जाए मर, गुर चरन सरन सरन चरन गुर लहणा देणा चुक्के बाकी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत मेला साचे दर, मेल मिलाए सुत्तयां राती।

गुरमुख सुत्ते साची रैण, हरि साचा आप जगाइंदा। दरस दिखाए साचे नैण, साचा नैण आप खुल्ह़ाइंदा। भेव ना पाइण सज्जण मीत भाई भैण, जगत बिधाता दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला नित अखवाइंदा।

इक इकांत हरि बनवारी, पारब्रह्म बेअन्ता। जन भगतां पैज रिहा सवारी, देवे माण साची संगता। देवे दरस वारो वारी, तोड़े गढ़ हँकारी हंगता। काया मन्दर सच अटारी, मिले मेला श्री भगवन्ता। निर्मल जोत करे उजिआरी, आप आपणा वेख वखंता। साचा शब्द सच्ची धुनकारी, साचा राग सुणंता। साचा सोहला मंगलाचारी, साचा ताल वजंता। साचा दर खोल्ह़ किवाड़ी, साचा धाम सुहंता। साचा पुरख हरि साची नारी, गुर प्यारी आप रखंता। फड़ उठाए भुजां पसारी, चतुरभुज हरि साचा कन्ता। अंगी अंग करे इक्क दवारी, जो जन चरन ध्यान रखंता। मिले मेल सच दरबारी, दर दरबारा इक्क सुहंता। थिर घर बैठा हरि निरँकारी, आप आपणा वेख वखंता। गुरमुख साजण सद बलहारी, जिस पाया पूरन भगवन्ता। हरिसंगत तेरी पैज सवारी, काया चोली हरि हरि रंगता। नंगे चरन फिरे दवारी, दर दवारे होया मंगता। पौणी भिच्छया एका वारी, पंच विकारा होए नंगता। देवे नाम सच्ची खुमारी, साची चोली आपे रंगता। लौणी शब्द इक्क उडारी, पार किनारा इक्क वखंता। काया गढ़ तुटे हँकारी, मिले वड्डिआई विच्च जीव जंता। गुरमुख मेला दूजी वारी, प्रभ आप मिलाया साचे कन्ता। भरमे भुल्ले जीव गवारी, प्रभ माया पाए बेअन्ता। हरिसंगत हरि ढहि पए दवारी, धन्न वड्डिआई साचे सन्ता। सन्त साजन सच सुहेला, सतिगुर पुरख मनाया। आपे गुरू गुरू गुर चेला, गुर मन्दर वेखण आया। दर घर साचे चाढ़े तेला, साचा सगन मनाया। पंचम सखीआं मिल मिल पाइण वेलां, साचा मंगल गाया। नाम शब्दी रंग नवेला, लाल भूशन तन सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रचन रचाया।

बसतर भूशन साचा गहणा, गुरमुख अंग लगाइंदा। नाम कज्जल साचे नैणां, साची धार रखाइंदा। गुर चरन दवारे साचा बहणा, कमलापती आप मनाइंदा। एका सेजा सदा रहणा, दे मत आप समझाइंदा। एका धाम अकट्ठे बहणा, दोए मूरती एका जोत जगाइंदा। गुर संगत गुर मन्नणा कहणा, दे मत आप समझाइंदा। कलिजुग माया विच्च ना वहणा, गुर पूरा पार कराइंदा। लक्ख चुरासी भाणा सहणा पैणा, ना कोई मेट मिटाइंदा। अन्तम नाता तुटे मात पित भाई भैणा, साक सज्जण ना कोई बचाइंदा। नाम सुहागी एका लैणा, सोहँ शब्द सुणाइंदा। तन बैरागी सुरती सोई जागी, पाया हरि वड भागी, चरन धूड़ मज़न

माघी, हँस बणाए कागी, जिस जन सच प्रीती लागी, साचा मार्ग इक्क वखाया। देवे नाम सच्चा अनरागी, दुरमत मैल धोवे दागी, अनहद मारे साची वाजी, ब्रह्मण्ड खोजे आदि जुगादी, जुग जुग खोज खोजाया। रसना गाए नाम सवादी, जिह्वा एका नाम अराधी, सरवन सुण सुण होए समाधी, नासका सुंघे शब्द अगाधी, नैण दर्शन मोहण माधी, दर दवारा दए सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर , हरिसंगत मेल मिलाया ।

मिल्या मेला पारब्रह्म, परम पुरख सुलतानया। हरिसंगत तेरा एका धरम, एका रूप वखानया। एका जोग एका कर्म, एका चरम जाणिआ । एका मिली साची सरन, सरन सरनाई इक्क वखानया। एका करता करनी करन, करता पुरख आप अखवानया। एका धरती धरत धरन, धवल आप सुहानया। आपे खोल्हे हरन फरन, एका रूप वटानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, गुरमुख साजन सच करे परवानया ।

दर घर साचे कर परवाना, देवे नाम निधानया। साचा बख्शे तीर कमाना, रसना चिल्ला इक्क वखानया। आत्म अन्तर ब्रह्म ज्ञाना, एका शब्द पढ़ानया। सोहँ बन्ने हत्थी गाना, गुर पूरा सगन मनानया। मेल मिलाए दो जहानां, एका राग सुणानया । इक्क वखाए पद निरबाना, साचा पद निरबानया। हरिजन साचा सुघड़ सिआना, मूर्ख मूढ़ तरानया। ना कोई पूजा पाठ वेद पुराना, खाणी बाणी ना कोई हिलानया। ना कोई आइत शराइत अञ्जील कुराना, ना कोई कलमा नबी सिखवानया। ना कोई तिलक मस्तक टिक्का आप लगाणा, त्रिसूल ना कोई वखानया। एका देवे नाम निधाना, किरपा कर श्री भगवानया। गुर पूरे साचे चरन ध्याना, जप तप जोग अभिआस बैठे मुख शरमानया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि सज्जण मेल मिलानया।

सज्जण हरि हरि साचा मीता, पतित पावन अखवाया। आपे जाणे आपणी रीता, आपे रिहा चलाया। आपे रामा आपे सीता, आपे काहना कृष्ना रूप वटाया। आपे जाणे अरजन गीता, आपे ज्ञान दृढ़ाया। आपे मन्दर आपे मसीता, गुरूदवारे आप बणाया। आपे होए सदा अतीता, आपे हर घट आप समाया। आपे होए नाम अनडीठा, आपे लेखा लेख लिखाया। आपे करे कराए कौड़ा रीठा, आपे अमृत मुख चवाया। आपे चाढ़े रंग मजीठा, आपे निर्मल नीर वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिसंगत लए तराया। (०७—४६ ५२)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

कलिजुग वेख घर सुहञ्जणा, हरि साचे जोत जगाईआ। हरिसंगत दवार निरञ्जणा, आदि अन्त विच्च समाईआ। हरिसंगत तेरी हरि करन आया तेरी चरन धूड़ मज़ना, पंज तत्त तेरे चरन हेठ दबाईआ। आपणे ताल आपे वज्जणा, तार सतार आप हलाईआ। हरिसंगत

तेरा प्यार हरि पी पी रज्जणा, आपणी तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। अन्तम पड़दा तेरा लोकमात प्रभ कज्जणा, नाम दोशाला उप्पर पाईआ। इक्क चलाए सच जहाजना, एका चप्पू रिहा उठाईआ । एका शब्द मारे अवाजना, रसना जिह्वा ना कोई हिलाईआ। हाढ़ सतारां रच्या काजना, जन भगतां होई कुड़माईआ। प्रभ करया खेल देस माझना, वीह सद बिक्रमी खुशी मनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका अमृत धार चलाईआ। (०७—३१३)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

साचा अमृत हरि वरताए, अमृत बरखा लाईआ। अमृत नीर आप हो जाए, गुरमुख दुध्ध विच्च समाईआ। गुरमुख दुँध नज़री आए, गुर पूरा नीर दिस ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हाढ़ सतारां हरिसंगत एका रंग रंगाईआ।

हरिसंगत हरि रंग राता, आपणी दया कमाइंदा। दिवस रैण जणाई इक्क परभाता, एका वक्त सुहाइंदा। एका नाम एका दाता, एका झोली पाइंदा। एका वखाए पूजा पाठा, सोहँ मंतर नाम दृढ़ांइंदा। एका अमृत मारे ठाठां, आत्म जाम प्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, वीह सौ बारां बिक्रमी तेरी धार, पुरख अबिनाशी कर त्यार, अमृत जल अपर अपार गुरमुख चुआइंदा।

अमृत आत्म हरि हरि चो, आपणा बीज बिजाया। हरिसंगत दुरमत मैल धो, निर्मल सरीर कराया। दरस दिखाए अग्गे हो, एका दूजा भउ चुकाया। जगत नाता तोड़े मोह, एका नाता घर बंधाया। हरिजन दूर ना जाणे को, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत तेरा मेल दर, दर दवार दए सुहाया। (०७—३१४ ३१५)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

हरिसंगत हरि आप समझाए, माया मोह तजौणा। काम क्रोध नेड़ ना आए, लोभ मोह हँकार दिस ना औणा। साची सिख्या इक्क सिखाए, गफ्लत नींद किसे ना सौणा। धुर दा लेखा आप जणाए, ना कोई मेटे ना किसे मेट मिटौणा। वीह सौ वीह बिक्रमी साची सिक्खी अमृत इक्क पिऔणा, साची रीत जणाए। रसना जूठ झूठ ना किसे मुख लगौणा, जो अमृत मुख लगाए। अठ्ठे पहर हरि गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द रसना गौणा, दूसर राग ना कोई कढाए। वड्डी खोर ना कोई पन्थ रखौणा, दूई द्वैती मेट मिटाए। अकाल पुरख तेरा धुन अनादी एका संख वजौणा, लोआं पुरीआं दए वखाए। गुरमुखां अंदर गुरू दवारा सच वखौणा, गुर गोबिन्द नज़री आए। अमृत प्याला भर पिऔणा, आपणी हत्थीं अग्गे डाए। साचा रस इक्क रसौणा, रस रसीआ नाम धराए। चार वरनां एका मार्ग पौणा, हिंदू मुस्लिम ईसाई ना कोई जणाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुखां वेला रिहा बताए। (०७ ३८४)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

निरगुण सरगुण साध संगत, गुरमुख मेल मिलाईआ। अन्दर चढ़े नाम रंगत, बाहर काया माटी ख़ाक दसाईआ। अद्धे बैठे नाम मंगत, अद्धे बैठे खेल खलाईआ। जिस जन प्रभ मिलण दी बणे बणत, तिस मेले सच्चा शहनशाहीआ। सरगुण बैठी साध संगत, निरगुण अन्दरे अन्दर खेल खलाईआ। सरगुण दिसे पंज तत्त चोला, जो जन दवारे नज़री आइंदा। निरगुण अन्तर रक्खया उहला, रूप रंग रेख ना कोई वखाइंदा। आपणा आप जीव ना जाणे मेरे अन्दर कवण बोला, कवण कूटे आसण लाइंदा। कवण मां पिउ भैण भरा साक सज्जण गाए ढोला, रसना जिह्वा कवण हिलाइंदा। कवण कवण जूठ झूठ पावन रौला, कवण सच सुच्च जणाइंदा। कवण चलाए उप्पर धौला, कवण कूटो कूट फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण खेल कर, संगत अंदर हरि जू वड़, आसण सिँघासण सोभा पाइंदा।

सरगुण संगत हरि हरि जोत, निरवैर निरवैर निरवैर आप रखवाईआ। काया बणया किला कोट, अन्दर लुकया बेपरवाहीआ। जिस जन कढ़ु हउमे खोट, तिस आपणा आप बुझाईआ । घर तन नगारे लगाए चोट, एका डंका नाम वजाईआ। अंदर जगाए निर्मल जोत, अन्दर वसणहारा फेर नज़री आईआ। झगढ़न वाले बहुत, नाम पकड़न वाला विरला गुरमुख गुरसिख मिले सच्चे माहीआ। बाहरों दिसदे हिलदे होठ, अन्दर हलौण वाला दिस किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साध संगत देवे माण वडयाईआ।

अद्धे रक्खण सतिगुर आस, दिवस रैण धिआईआ। अद्धे होए मन के दास, मन वासना फिरे भजाईआ। अद्धे जपण रसन स्वास स्वास, अद्धे गालीआं रहे कढ़ुाईआ। अद्धयां करके जाणी आपणी बन्द खुलास, अद्धे ख़ाली हत्थ भवाईआ। अद्धयां वसे सदा पास, अद्धे निरास रोवण मारन धाहींआ। सतिगुर नज़र ना आए पृथ्मी आकाश, जो जन बैठे मुख भवाईआ। तिन्नां सतिगुर वसे पास, जो हरि सतिगुर निउँ निउँ सीस झुकाईआ। एथ्थे उथ्थे करे बन्द खुलास, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा इक्को वर, मंगणहारी सर्ब लोकाईआ।

अद्धे मंगण शब्द घनघोर, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। अद्धे रातीं उठ उठ फिरदे चोर, लुट्ट लुट्ट जीवां रहे सताईआ। अद्धे चढ़दे नाम घोड़, सोलां कलीआं आसण पाईआ। अद्धे आपणा आप रहे रोढ़ , विषे विकारा वक्त गवाईआ। सतिगुर पूरे दी सदा लोड़, बिन सतिगुर पार ना कोई कराईआ। निरगुण सरगुण तेरी आपणे हत्थ रक्खी डोर, जिध्धर चाहे रिहा भवाईआ । गुर अवतारां आपणे हुक्मे देवे तोर, अन्तम आपणे विच्च लए मिलाईआ। बिन बूझे जीव पावे शोर, समझ समझ विच्च ना आईआ। अद्धे मंगदे कुछ होर, अद्धे मंगदे कुछ होर, देवणहारे घर कोई ना थोड़, जो मंगे सो वस्त झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुरमुख मनमुख मनमुख गुरमुख दोवें राह चलाईआ । (१०—६६२ ६६३)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

गुर संगत तेरा जन्म दिहाढ़ा, हरि साचा आप समझाइंदा । एका दिवस सतारा हाढ़ा, शब्दी शब्द उपजाइंदा। एका मंगल इक्क अखाड़ा, एका सखीआं मेल मिलाइंदा। एका पुरख एका नार, एका गोबिन्द नाउँ धराइंदा। एका मीत इक्क मुरारा, एका नाम जैकारा लाइंदा । इक्क बसन्त इक्क बहारा, फुल फुलवाड़ी इक्क महकाइंदा। एका घर इक्क भण्डारा, एका इक्क वरताइंदा। एका दर खुल्ला संसारा, जगत दर बन्द कराइंदा। ना कोई लाया इट्टां गारा, गुर संगत तेरा प्रेम प्यार चार दिवार बणाइंदा। तेरे दर बण भिखारा, आपणी भिच्छया आपणी झोली आपे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे जन्म दवाइंदा।

गुरमुख उपज्या साचा पूत, हरि साचे जन्म दवाया। तन काया ना लग्गे सूत, कलिजुग सूतक रहण ना पाया। वज्जे वधाई चारे कूट, चारों कुण्ट जैकारा लाया। नाता तोड़ जूठ झूठ, साचा मार्ग इक्क रखवाया। अबिनाशी करता आपे तुट्ठ, दे मत रिहा समझाया । सदा संग रहणा एका मुट्ठ, दूई द्वैती नेड़ ना आया। चरन चरनोदक पीणा घुट, दूसर हत्थ ना किसे आया। हरिसंगत विच्च ना दिसे फुट, सतिगुर अन्दर डेरा लाया। आवण जावण लक्ख चुरासी जाए छुट्ट, जिस जन साचा बचन कमाया। मनमुखां जीवां दर दवारिउँ कढ़े कुट, वेले अन्त दए सज़ाया। सोहँ मुंमा साचा सीर अमृत रसन प्याया घुट, इकी मध्घर दिवस सुहाया। हरिसंगत तेरा भाग ना जाए निखुट, तेरी काया जोत इक्क टिकाया । तेरी ना कोई वरन ना कोई गोत, तेरा रूप ब्रह्म जणाया। पारब्रह्म अबिनाशी करता विष्नूं वंसी बणाए ओत पोत, कोहतरवान ना कोई जणाया। इक्क इकल्ला करे खेल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, हरिसंगत वेख वखाया।
(८—६४६ ६४७)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

संगत अन्दर हरि का वासा, बिन संगत हरि जू कम्म किसे ना आईआ। संगत उत्ते गुर भरवासा, बिन गुर संगत ना कोई बणाईआ। बिन संगत गुरू रहे निरासा, गुर गुर कह कह सिफ्त ना कोई सालाहीआ। दोहां अन्दर खेल करे पुरख अबिनाशा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेस वटाईआ। आदि अन्त पुरख अकाल इक्को गुरू जुग जुग वेखे तमाशा, बहुते गुरू कम्म किसे ना आईआ। नानक गोबिन्द दस जोती पाई साची रासा, मण्डल मंडप इक्क सुहाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर, हरिसंगत बणाए साची बणतर, नाम जणाए इक्को मन्त्र, लेखा जाणे गगन गगनंतर, सर्ब जीआं घट जाणे अन्तर, बिन अन्तर सतिगुर रूप ना कोई अखवाईआ।

संगत वड्डी गुर वड्डिआए, बिन गुर संगत कहण कोई ना पाईआ। नाम रंगत गुर चढ़ाए, बिन गुर रंग ना कोई वखाईआ । नाम मरदंगा गुर वजाए, बिन गुर अनहद राग ना कोई सुणाईआ । संगत संग गुर बणाए, बिन गुर संगी नज़र कोई ना आईआ। हरिसंगत

सतिगुर चन्द चढ़ाए, जगत अन्धेरा दए मिटाईआ। आदि जुगादी लिखया लेखा ना कोई खण्डत कराए, अखण्ड इक्को रूप रघुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा सद संगत रिहा वडयाईआ।

सतिगुर रूप भिन्न भिन्न, आदि जुगादि कराइंदा। गुरमुख विरला जाणे सच्चा चिन्नू, जिस आपणा निरगुण चिन्नू चक्कर वखाइंदा। कोटन कोट रूप वटाए गिण गिण, धरू प्रहिलाद कवण रूप धराइंदा। पुरख अकाल वेस वटाए छिन्न छिन्न, छिन्न भंगर आपणा खेल जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच्चा रूप इक्क समझाइंदा।

गुर का रूप आदि जुगादि इक्क, निरगुण नूर रुशनाईआ। बाहरों पंज तत्त चोला रिहा दिस, हड्ड मास नाड़ी रत्त ना कोई वडयाईआ। अन्तर आत्मा दर्शन पाया जिस, बाहर वेखण कोई ना जाईआ। जगत लबास कलिजुग वन्डया हिस, हिस्सा शहनशाही समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि गुरदेव इक्को रंग वखाईआ।(१२—७७५)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

हरिसंगत हरि हरि करे हड़प, आपणे विच्च छुपाईआ। जन्म जन्म दी मेटे तड़प, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। प्रीती विच्च रहण ना देवे कोई फ़रक, फ़ुरना आपणे नाल मिलाईआ। लक्ख चुरासी कर के तरक, तुरत गुरमुख रिहा जगाईआ। सभ दे पत्रे रिहा परत, गुरमुखां आपणा नाम पढ़ाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाल करदा रिहा लिखत पढ़त, हुक्म संदेश सुणाईआ। कोटन कोट नाम विच्च रक्खदा रिहा धड़त, धरत धवल खेल कराईआ। कलिजुग अन्तम फेरा पाए आप नधड़क, निरवैर बेपरवाहीआ। चढ़ावणहारा अगम्मी कड़क, काल महांकाल हुक्म जणाईआ। आपणी ताकत आपे रिहा फरक, बल आपणा आप जणाईआ। लक्ख चुरासी विच्चों कढ़ु के अरक, हरिजन साचे बाहर कढ़ाईआ। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत कलिजुग वहण विच्च चलो मटक मटक, चाल इक्को इक्क जणाईआ। सच्चे साहिब नूं मिलो हो नधड़क, धड़कण पिछली दए गवाईआ। एथ्थे ओथ्थे करे तुहाढ़ी चढ़त, चढ़दीआं कलां दए वखाईआ। जिस दे पिच्छे भुक्खे मरदे रहे रक्ख रक्ख बरत, सो दिवस रैण अठ्ठे पहर अमृत जाम प्याईआ। सृष्ट सबाई करे हरख, गुरमुख खुशी लए परनाईआ। सतिगुर साहिब करे तरस, तरसदिआं आपणे नाल मिलाईआ। अमृत मेघ देवे बरस, अंमिउँ रस इक्क चवाईआ। पिछला लाहवे पूरब कज़, अग्गे देवे माण वडयाईआ। इक्को राग सुणाया बिन ताल तर्ज़, तलवाड़ा साज ना कोई वजाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सभ ने कहणा गरज, गर्ज़ सभ दी पूर कराईआ। (१३—५६३)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

हरिसंगत तेरा रूप अनोखा, चार जुग मिले वड्डयाईआ। गुरसिख गुरसिख किसे नाल करे ना कोई धोखा, सच सुच इक्क समझाईआ। माणस जन्म प्रभ मिलण दा मौका, लक्ख चुरासी विच्चों नज़री आईआ । कूड़ी क्रिया अन्दर ना होणा थोथा, होछी मत ना कोई वड्डयाईआ। काया अन्दर आपणा खोल्ह के पड़्हो पोथा, पुस्तक हरि जी आप लिखवाईआ। जिस दे अन्दर लुके चौदां लोका, चौदां तबक मुख छुपाईआ। तिस दा नाम इक्क सलोका, सोहला इक्को इक्क वड्डयाईआ। उस साहिब दी रक्खो ओटा, पुरख अकाल सची सरनाईआ। जिस वसाइआ पटणा पौंटा, अन्त नदेड़ गिआ समझाईआ । सो इक्को ढईआ सुत्ता रिहा ला के ढौंका, सचखण्ड आपणी सेज बणाईआ। कलिजुग अन्तम साढ़े तिन्न हत्थ आपे वेखे कोठा, सम्बल नगरी डेरा लाईआ। पुरख अकाल सतिगुरू इक्को बहुता, बहुते गुरू कम्म किसे ना आईआ। काया अन्दर मार के वेखो गोता, हीरे माणक लाल जवाहर मेरा नाउँ घर घर विच्च नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत सतिजुग सच करे पढ़ाईआ।

हरिसंगत तेरा सतिजुग सोहला, सो पुरख निरञ्जण आप जणाइन्दा। आत्म परमात्म मिल के गाओ ढोला, ढोलक छैणा ना कोई वजाइन्दा। काया बदलणहारा चोला, चोली रंग आप रंगाइन्दा। अन्तर आत्म आपे मौला, मौला आपणी खेल वखाइन्दा। अमृत भरे नाभ कौला, कँवल नाभी आप उलटाइन्दा। देवे वड्डिआई उप्पर धवला, धरनी धरत धवल सुहाइन्दा । जिस नूं कहन्दे नूर इल्लाही अवल्ला, आलमीन खेल खलाइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत आई आपणे रंग रंगाइन्दा।

हरिसंगत आई सच दुआर, मिले नाम वड्डयाईआ । राए धर्म ना करे खुआर, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। लाड़ी मौतना करे शिंगार, वेले अन्त ना लए परनाईआ। सतिगुर पूरा दए दीदार, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। फड़ के बाहों लए उठाल, आत्म परमात्म आप जगाईआ। उठ सवाणी चल मेरे नाल, पीआ प्रीतम उंगली लाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, चारे वरनां करे कुड़माईआ । जन भगतां पुच्छे आपे हाल, मुशर्द मुरीदां वेख वखाईआ । वेले अन्त ना खाए काल, महांकाल पल्लू दए छुडाईआ। जन भगतो हल्ल होए सवाल, बाकी कोई रहण ना पाईआ। श्री भगवान बणे दलाल, सच दलाली आप कमाईआ । धन्न भाग जो घालण आए घाल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत तेरा ढोला गाईआ।

हरिसंगत तेरा नाम प्यारा, चार जुग वड्डिआइन्दा। जिस दे हिरदे वसे गुरू अवतारा, पीर पैगम्बर डेरा लाइन्दा। तिन्नां मित्र आप निरँकारा, निरगुण आपणी सेव कमाइन्दा। सच्चा सोभिआ इक्क दुआरा, सो साहिब वेख वखाइन्दा। मालवे खोल्लया सच किवाड़ा, कुण्डा आपणी हत्थीं लाहिंदा । गोबिन्द अन्त पा के गिआ पुआड़ा, श्री भगवान साचा संग निभाइन्दा। कपूर सिँघ कढ़ुदा रिहा हाढ़ा, चालीवां मुकता आपणे दोए दोए जोड़ हक़

सीस निवाइन्दा । कवण वेला वेखां धुरदरगाही लाड़ा, सतिगुर इक्को नज़री आइन्दा। जिस ने हरिसंगत माण दवाइआ सतारां हाढ़ा, हरि जू आपणा लेखा हरिसंगत झोली पाइन्दा । जिस दीआं गुर अवतार पीर पैगम्बर गौंदे गए वारा, सो वारता भगतां आप सुणाएन्दा। जन वेखण आया तेरा प्यारा, पीआ प्रीतम फेरा पाइन्दा। हरिसंगत तेरा वेख्या मुफ़त नज़ारा, नज़र विच्च इक्को नर हरि नज़री आइन्दा। सभ नालों कर के बैठे किनारा, कर्म कांड किसे नेड़ ना आइन्दा। कोई लभ्भण जाए ना जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, अन्दर वड़ डूंघी कंदर ध्यान ना कोई लगाइन्दा । जिन्नां सतिगुर पूरा नज़री आए ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर दया कमाइन्दा। तिस दा दो जहान करन मुज़ाहरा, मुफ्त आपणा खेल कराइन्दा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि संगत तेरा वेख्या घर, घर इक्को नज़री आइन्दा।

इक्को घर इक्क दरवाज़ा, इक्को बंक सुहाईआ। इक्को पुरख गरीब निवाज़ा, देवणहार सदा वड्डिआईआ। इक्को नाम निधान वजाए वाजा, सुर ताल इक्क रखवाईआ। इक्को भूप इक्को राजा, शहनशाह इक्क अखवाईआ। इक्को करता इक्को काजा, इक्को करनी रिहा कमाईआ । इक्को मारनहारा वाजां, इक्को सतिगुर रिहा जगाईआ। इक्को जुग चौकड़ी फिरे भाजा, नित नवित्त आपणा वेस वटाईआ। इक्को कलिजुग अन्तम आया देस माझा, सम्बल नगरी सोभा पाईआ । इक्को वजाए सति रबाबा, नाम सति करे पढ़ाईआ। इक्को पकड़े हत्थ वागा, डोर इक्को हत्थ उठाईआ । इक्को पार कराए हादा, हदूद अरबा आपणे चरनां हेठ रखवाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दए वड्डयाईआ।

हरिसंगत तेरा सच मुनारा, मुनी मुनीशर ध्यान लगाईआ । इकी सावण चल के औण गुरू अवतारा, पीर पैगम्बर फेरा पाईआ। साचा लग्गे धर्म अखाड़ा, निरगुण सरगुण गोपी काहन नचाईआ। मिले मीत अगम्मी यारा, यारी यारां नाल रखवाईआ। जिस नूं कहन्दे एकंकारा, अकल कला रिहा समाईआ। सो लै के आया नाम भण्डारा, अणमंगिआं रिहा वरताईआ। रातीं सुत्यां दए दीदारा, दिने जागदिआं दरस दिखवाईआ। निरगुण नूर जोत उजिआरा, शब्दी शब्द डंक वजाईआ। कागद कलम लिख लिख हारा, कातब चले ना कोई चतुराईआ। बेअन्त अन्त कहे ना कोई विच्च संसारा, "किउं" घर घर बैठा डेरा लाईआ । जो आपणा खोल्हे आप कवाड़ा, तिस सतिगुर दए बुझाईआ। जिस निरँकार मिल्या नानक सतिगुर मीत मुरारा, सो सतिगुर नानक भगतां गुरसिखवां दए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पीर पैगम्बर गुर अवतार कुतब औलीए गौंस यार वेखणहारा थाउं थाईंआ।

हरिसंगत साचा मेला, मिलणी जगदीश कराईआ। इक्को घर सोहे गुरू चेला, चेला गुरू रूप वटाईआ। पुरख अबिनाशी मिल्या सज्जण सुहेला, घर साचे वज्जे वधाईआ। वसणहारा धाम नवेला, हरिजन वेखे चाईं चाईंआ। जोत निरञ्जण चाढ़े तेला, आदि निरञ्जण सगन

मनाईआ । अचरज खेल प्रभू कल खेला, ख़ालक ख़लक भेव ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत दुआरे दए वड्डिआईआ।

हरिसंगत तेरा नाम इक्ठ, हरि शब्दी जोड़ जुड़ाइन्दा। बीज बीजे आत्म वत, अमृत सिन्च हरा कराइन्दा। फुल्ल फुलवाड़ी वेखे पत, पत डाली आप महकाइन्दा। बूटा गोबिन्द लाया हस्स हस्स, श्री भगवान फुल्ल खिलाइन्दा। दूर दुराडा वेखे नट्ठ नट्ठ, बण पान्धी पन्ध मुकाइन्दा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत जोड़ जुड़ाइन्दा ।

हरिसंगत हरि जू जुड़िआ जोड़ा, शब्दी सुरती मेल मिलाईआ। साहिब सतिगुर इक्को घोड़ा, नाम निरवैर रिहा वखाईआ । सस्से उप्पर लाया होड़ा, होका दो जहानां सुणाएंआ । हँ ब्रह्म प्रभ आपे बौहड़ा, आत्म परमात्म भेव चुकाईआ। अग्गे वेला रहि गिआ थोड़ा, कलिजुग रोवे मारे धाहींआ। किसे दा अटकाया अटके कोई ना रोड़ा, रोकणहारा नज़र कोई ना आईआ । ज़ोरू ज़र ना चले ज़ोरा, ज़ोरावर बेपरवाहीआ। जिस दा मन्त्र इक्को फोरा, फ़ुरने विच्च सर्ब लोकाईआ । सो साहिब हरिसंगत तेरी पकड़े डोरा, डोरी आपणे नाल बंधाईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त मनमुखां देवे जवाब कोरा, लारा लप्पा ना कोई लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सच अखाड़ा एकँकारा विच्च संसारा, निरगुण धारा आप लगाईआ । (१५—८१ ८३)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

साची खेल करे करतार, करते हत्थ वड्डी वडयाईआ। हरिसंगत देवे इक्क प्यार, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। उह बच्चे गोबिन्द रक्खे नाल, जो जंग शहादत गए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदी वीहवीं वीहवां हिस्सा आपणा आपणे हिस्से पाईआ।

वीहवें हिस्से तों होई इक्की, एकँकार देवे वडयाईआ। गुरू नालों संगत उच्ची, संगत विच्च बैठा हरि जू डेरा लाईआ। जिन्हां दी पुरख अकाल नाल लग्गी रुची, तिन्हां दी रचना वेखे जगत लोकाईआ। एहो धार नौं सौ चुरानवें चौकड़ी जुग पिच्छों चलाई पट्टी, जिस दी समझ किसे ना आईआ। एथे गोबिन्द सिखी अज्ज नहीं लुकी, बच्चिआं अगला राह वखाईआ। जिन्हां धरत धवल दी मिट्टी आपणी पिट्ठ चुक्की, थल्ले बैठे डेरा लाईआ। जिन्हां दी राख फड़ के इक्क इक्क मुट्ठी, राज राजानां शाह सुल्तानां साधां सन्तां घर घर दिती पुचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत देवे माण वडयाईआ । देवे माण वड्डिआई विच्च संगत, सिँघ संगत लए उठाईआ। नाल रलाए ब्रह्मण पंडत, नौं जन्म दा पन्ध चुकाईआ। (१६—१४६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

गुर संगत गुर माण दवाए। गुर संगत प्रभ जोत प्रगटावे। गुर संगत मिल हरि हरि रसना गावे। गुर संगत सुहाए थान, जिथ्थे प्रभ जोत जगावे। गुर संगत उपजे हरि नाउँ, गुरमुख बण जावे। गुर संगत गुरमुख गुर डेरा लावे। गुर संगत हरि धाम प्रगटावे, विच्च कल दे आवे। गुर संगत गुर नाउँ प्रकाश, जोत सरूप प्रभ बूझ बुझावे। गुर संगत गुर चरन प्यास, प्रभ अबिनाशी अबगत अगोचर नैणी दरसावे। गुर संगत गुर शब्द सुणाया। कोई विरला पावे। गुर संगत गुर प्रगट कीना, कलिजुग जोत गुर संगत समावे। गुर संगत गुर रंग माणे । गुर की महिंमा लखी ना जाणे। गुर संगत गुर दरस दिखाया।
(२ भादरों २००७)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

साध संगत प्रभ दे वड्डिआई। साध संगत प्रभ भए सहाई । साध संगत सुरती सुरत ध्यान ज्ञान प्रभ दवाई। साध संगत चरन धूड़ इशनान प्रभ दर नहाई। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, होए सदा सहाई। साध संगत सद पूरन आसा। साध संगत गुर चरन भरवाासा।
(२२ माघ २००८)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

बणत बणाए आप प्रभ, साचा वक्त सुहाए। बणत बणाए आप प्रभ, साध संगत प्रभ अबिनाशी रसना गाए। बणत बणाए आप प्रभ, गुरसिखां जोत जगाए। बणत बणाए आप प्रभ, साध संगत सदा संग रहाए। बणत बणाए आप प्रभ, साचा छत्तर सीस झुलाए। बणत बणाए आप प्रभ, पंचम हार गल पहनाए। बणत बणाए आप प्रभ, पंचम पंचम प्रभ संग रलाए। बणत बणाए आप प्रभ, चार कुण्ट दरबान बणाए। बणत बणाए आप प्रभ, पंजवां सिर चवर झुलाए। बणत बणाए आप प्रभ, अचरज खेल कल वरताए। बणत बणाए आप प्रभ, जोत सरूपी जोत प्रगटाए। बणत बणाए आप प्रभ, हँकारीआं प्रभ हँकार गवाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत सद माण दवाए।

बणत बणाए आप प्रभ, वक्त सुहेला। बणत बणाए आप प्रभ, अचरज खेल पारब्रह्म कल खेला। बणत बणाए आप प्रभ, साध संगत प्रभ मेल मिलाया मेला। बणत बणाए आप प्रभ, साध संगत जणाए दसाए अन्तम वेला। बणत बणाए आप प्रभ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा सज्जण सुहेला। (११ फग्गण २००८ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

साध संगत प्रभ किरपा कर। गुर संगत देवे प्रभ साचा वर। साध संगत प्रभ जोत धर। गुर संगत तराए अवतार नर। साध संगत प्रभ रोग हर। गुर संगत प्रभ किरपा जाए कर। साध संगत गुर चरन लाग जाए तर। गुर संगत रंगत रंगाए नाम साचे सर। गुर संगत सहिंसा भउ चुकाए डर। गुर संगत दिखावे साचा घर। साध संगत खुलावे प्रभ आत्म साचा दर। गुर संगत प्रभ मेल मिलावे दरस दिखावे, जोत सरूपी जोत धर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान गुर संगत किरपा जाए कर।

साध संगत गुर साचा माण। गुर संगत बख्शे एका चरन ध्यान। साध संगत आत्म गवाए सर्ब अभिमान। गुर संगत सोहँ देवे गुर साचा दान। साध संगत दर आई मंगत, देवे दरस आप भगवान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा सर्ब जनां दा जाणी जाण।

साध संगत प्रभ साचा संग। गुर संगत प्रभ रक्खे अंग। साध संगत कल जाए पार लघँ। गुर संगत मानस जन्म ना होए भंग। साध संगत साचा प्रभ दर घर साचा मंग। गुर संगत दिसावे प्रभ ऊँचा दर, गुरसिख मूल ना संग। गुर संगत अमृत झिरना झिराए गंग। गुर संगत प्रभ होए सहाई कट्टे भुक्ख नंग। गुर संगत चढ़ाए प्रभ सोहँ मजीठी रंग। बेमुख जीव भन्नाए कल जिउँ झूठी कच्च वंग। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, होए सहाई सदा अंग संग।

साध संगत प्रभ सद प्रितपाल। गुर संगत प्रभ सार समाल । साध संगत चरन प्रीती निभे नाल। गुर संगत प्रभ परखी नीती आत्म वेखे साचा लाल। साध संगत सदा जग जीती, मुख रखाया सिँघ पाल। कलिजुग औध अन्त अन्त अन्त कल बीती, किरपा करे दीन दयाल । साध संगत प्रभ काया सीतल कीती, भगत रच्छक दीन दयाल। गुर संगत सद रहे जग जीती, प्रभ तोड़े जगत जंजाल। साध संगत आत्म रस गुर चरन दर पीती, सोहँ देवे सच्चा धन माल। गुर संगत सदा जग अतीती, आत्म दीपक प्रभ देवे बाल। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आदि अन्त होए आप रखवाल।

साध संगत प्रभ आपे राखे। गुर संगत दर साचा भाखे। साध संगत लेख लिखाए अलक्खणा अलाखे। गुर संगत प्रभ मेल मिलाए, मेट वखाए जो लिखी बिधना माथे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साध संगत तेरा सगला साथे।

साध संगत तेरा सगला साध। गुर संगत तराए त्रैलोकी नाथ। साध संगत रक्खे दे कर हाथ। गुर संगत लेख लिखाए प्रगट विच्च माथ। साध संगत प्रभ शब्द जणाए, सोहँ साची गाथ। गुर संगत प्रभ शब्द चढ़ाए, चलाया साचा राथ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साध संगत तेरा सगला साथ।

साध संगत प्रभ सगला साथी। गुर संगत मिल्या प्रभ नाथ अनाथी। साध संगत

कर दरस पाए वस्त सोहँ साची वाथी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सर्ब कला समरथ, महिंमा अकथ्थ अकाथी।

आप अकथ्थ ना कथिआ जाए। सोहँ साचा रथ प्रभ जगत चलाए। जीव जंत प्रभ साची गथ, स्वास स्वास जन रसना गाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान सर्ब कला समरथ, गुर संगत आण तराए।

गुर संगत प्रभ आण तराई। गुर संगत प्रभ रहे सरनाई । साध संगत प्रभ पूरन मत पाई। गुर संगत मन वज्जी वधाई। गुर पूरे गुर संगत जोत प्रगटाई। साध संगत प्रभ मिल्या सर्ब सुखदाई। गुर संगत देवे नाम वड्डिआई। साध संगत प्रभ बणाए भैणां भाई। गुर संगत प्रभ रिहा समाई। साध संगत प्रभ रचन रचाई। गुर संगत प्रभ लोहा कंचन बणाई। साध संगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणी देवे आप सरनाई।

साध संगत प्रभ सरनाई। गुर संगत प्रभ चरन लगाई। साध संगत हरि हरि हरि सद रसना गाई। गुर संगत प्रभ अबिनाशी चल घर आई। साध संगत सच धाम सुहाई । गुर संगत रैण सबाई प्रभ रसना गाई। साध संगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान स्वच्छ सरूप दरस दिखाई।

साध संगत प्रभ साचा जाण। साचा प्रभ चरन धूड़ देवे इशनान। साध संगत दर साचा प्रभ साचा देवे दान। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, गुणवन्त गुणी निधान।

साध संगत गुर सतिगुर पाया। साध संगत साचा लेख धुरों प्रभ लिखाया। साध संगत प्रभ कलिजुग वेख चरन सेव लगाया। साध संगत जोत सरूपी जणावे भेख, दे दरस चिन्ता रोग मिटाया। साध संगत वड्डिआई वड नरेश, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आपणी दया कमाया।

साध संगत गुर पूरा पाया। गुर संगत प्रभ होए सहाया । साध संगत दुःख रोग मिटाया। गुर संगत विजोग चुकाया। साध संगत हउमे रोग नेड़ ना आया। गुर संगत प्रभ चरन जोड़, दरगाह साची माण दवाया। साध संगत प्रभ साचे दी साची लोड़, वेले अन्त होए सहाया। साध संगत प्रभ होए सहाई। गुर संगत प्रभ दरगाह माण दवाई । साध संगत सच धाम बहाई। गुर संगत बख्शे आप रघुराई। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत सचखण्ड निवास रखाई।

साध संगत धाम न्यारा। गुर संगत सचखण्ड मुनारा। साध संगत एका जोत अकारा । गुर संगत एका गोत एका दिसे निरँकारा । साध संगत घर साचे देवे अमृत भण्डारा। गुर संगत प्रभ देवे खोल्ह दस्म दवारा। गुर संगत प्रभ देवे पवन हुलारा। साध संगत जोत

सरूपी सद रक्खे आप पसारा। गुर संगत गुर सद सद सद बलिहारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका देवे सचखण्ड दवारा।

एका जोत प्रभ अकारा। बैठा अडोल आप निराधारा। रिहा तोल सर्ब संसारा। प्रभ अनमोल जीव ना पाइण सारा। गुर संगत देवे पड़दे खोल्, चल आइण सच दरबारा। सोहँ शब्द वजाए ढोल, उपजे धुनकारा। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, साध संगत तरावे रखावे चरन दवारा।

साध संगत गुर चरन बलिहारे। गुर संगत प्रभ पैज सवारे। साध संगत जुगो जुग प्रभ साचा तारे। गुर संगत वड वड्डिआई देवे आप गिरधारे। महाराज शेर सिँघ रक्खे पत्त, साध संगत जिउँ राणी तारा हरी चन्द नारे। (१७ विसाख २००६ बिक्रमी)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

गुर संगत गुर दर पाया। गुर संगत प्रभ दर साचे माण रखाया। गुर संगत दर दरबार, प्रभ साचे निवास रखाया। गुर संगत सति तेरा नाम, करोड़ तेतीस रसना गाया । गुर संगत कल तेरा माण, खण्ड ब्रह्मण्ड विच्च वरभंड प्रभ वडिआया। गुर संगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड निवास रखाया।

गुर संगत मिले वड्डिआई। गुर संगत प्रभ अबिनाशी सेव कमाई। गुर संगत रसना जप जप जप आत्म तृखा मिटाई। गुर संगत मिल गुरमुख मिल प्रभ अबिनाशी सेव कमाई। गुर संगत प्रभ आत्म चाढ़े साचा रंग, सोहँ दात प्रभ झोली पाई। गुर संगत गुर दर मंग, साची भिच्छया प्रभ नाम पाई। गुर संगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि तेरा होए सहाई।

गुर संगत तेरी साची सार। गुर संगत प्रभ जाए तार। गुर संगत प्रभ एका बख्शे चरन प्यार। गुर संगत दिसावे प्रभ हरि का दवार। गुर संगत निहकलंक बेड़ा कर जाए पार। गुर संगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच्चा देवे नाम अधार।

गुर संगत गुरसिख पछाणे। गुर संगत प्रभ अबिनाशी जाणे। गुर संगत हरि रंग हरि प्रभ का माणे। गुरमुख होए चतुर सुघड़ सिआणे। गुर संगत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची दरगाह देवे माणे।

गुर संगत संगत गुर बण। एका उपजावे शब्द धुन । गुरमुख साचे आत्म जाए मन्न। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म मिटाए सारा जन।

गुर संगत तेरी साची गाथा। गुर संगत रक्खे लाज त्रैलोकी नाथा। गुर संगत प्रभ लेख लिखाए तेरे माथा। गुर संगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ चढ़ाए साचे राथा ।

गुर संगत गुर मिले गुण निधानी। गुर संगत प्रभ वड वड दानी। गुर संगत देवे नाम दात सर्ब घट जाणी। गुर संगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म जोत जगाए महानी।

गुर संगत गुर दर विचार। प्रभ साचा जाए पैज सवार। भगत वछल प्रभ गिरधार । मातलोक आए जामा धार। जोत सरूप कीआ अकार। कलिजुग जीआं करे खुआर। मदिरा मास कराए आहार। गुरमुख साचे प्रभ जाए तार। एका बख्शे नाम अधार। सोहँ कराए जै जै जैकार। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, आपणी कल कल करे वरतार।
(२२ माघ २००८)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

गुर संगत गुर दर परवान साध संगत चतुर सुजान। गुर संगत प्रभ देवे माण। साध संगत प्रभ सच पछाण। गुर संगत होए दरबान। साध संगत प्रभ साचा पाया, आत्म दुःख गवाया, सर्ब सुख प्रभ दर ते पाया, देवे महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान ।

साध संगत तेरी बन्द खलासी। मिल्या प्रभ घनकपुर वासी। दरस परस मिटाई हरस प्रभ साचा सद बल बल जासी। साध संगत प्रभ उतारी सर्ब उदासी। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म कराए रासी।

साध संगत तेरी आत्म रास। गुर संगत प्रभ रक्खे वास। गुर संगत प्रभ वसे पास । साध संगत मिल्या प्रभ अबिनाश। गुर संगत तजाए रसन ना लाए मदिरा मास। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, मानस जन्म कराए रास। (१५ सावण २००६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

गुर संगत प्रभ साचा गाया। दर घर साचे सेव कमाया। गुर संगत गुर दया कमाया। आप आपणी कारे लाया। गुर संगत कल नाउँ वडिआया । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणे दर बहाया।

आए दर चरन हज़ूरे। आसा मनसा प्रभ साचा पूरे। आत्म सहिंसा होए दूरे। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सर्ब जनां आप उतारे सगल वसूरे।

गुर संगत गुर दर सेवा। गुर संगत पाया प्रभ अलख अभेवा। गुर संगत प्रभ साचा

देवे साचा मेवा। गुर संगत प्रभ आप वड्डिआए वड देवी देवा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन रसना सेवा।

गुर संगत गुर धाम न्यारा। गुर संगत देवे प्रभ साचा घर बाहरा। गुर संगत लेवे सोहँ अधारा। गुर संगत प्रभ आत्म कढ्ढे विकारा। गुर संगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे देवे सहारा।

गुर संगत प्रभ रक्खे माण। गुरसिख गुर संगत राह साचा जाण। गुर संगत प्रभ करे पछाण। गुर संगत प्रभ वड मेहरबान। गुर संगत प्रभ पाए सोहँ साची आण। गुर संगत प्रगट जोत शब्द सुणाए कान। गुर संगत बख्शे एका चरन ध्यान। गुर संगत देवे आत्म ब्रह्म ज्ञान। गुर संगत गुर पूरा पाया, गुणवन्त गुणी निधान। गुर संगत आत्म तृप्ताया सोहँ मिल्या साचा नाम मेघ सावण। गुर संगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप उपजाए आप चलाए जोत सरूपी स्वास पवण।

गुर संगत आए सच दवारा। गुर संगत देवे प्रभ साचा नाम अधारा। गुर संगत हरि दर घर पाए साचा कन्त प्यारा। गुर संगत गुरमुख विरला रल जाए सन्त प्यारा। गुर संगत प्रभ माण रखाए जोत सरूप जोत निरँकारा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक नरायण नर अवतारा।

गुर संगत गुण आप विचारे। गुर संगत प्रभ आपे तारे। गुर संगत प्रभ एका देवे शब्द अधारे। गुर संगत सोहँ लगाए जै जै जैकारे। गुर संगत महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे खड़ा दवारे।

आपे आए चल दवार। प्रभ साचा सद बल बल हार। दर घर आए पाए सार। गुर संगत प्रभ जाए तार। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे पाए सर्ब सार।

गुर संगत गुर साचा पाया। गुर संगत प्रभ भउ चुकाया। गुर संगत सोहँ साचा दाओ लगाया। गुर संगत सार पासा आप जणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा मेल मिलाया।

गुर संगत गुर दरबारे। गुर संगत प्रभ काज सवारे। गुर संगत प्रभ साचा रसन उच्चारे। गुर संगत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप बणे वरतारे।

गुर संगत प्रभ माण रखाया। गुर संगत प्रभ आण रखाया। गुर संगत निताणयां ताण होए सहाया । गुर संगत, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे आप बणे दाई दाया।

गुर संगत देवे साचा वर। दुःख दर्द प्रभ जाए हर। एका एक जाए कर। निहकलंक जोत धर। गुरमुखां मन वज्जी वधाई, प्रभ साचा जाए सच घर। (२४ सावण २००६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

गुर संगत प्रभ सद समाया। संगत गुर गुर संगत आप अखवाया। गुर संगत संग आप रलाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप आपणा विच्च धराया।

गुर संगत कल कीनी वक्ख। वेले अन्त प्रभ लए रक्ख। बेमुख जीव कराए लक्ख कक्ख। सृष्ट सबाई होए भक्ख। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपणी कल वरताए, ना कोई सके रक्ख। (५ कत्तक २००६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

गुर संगत गुर दया कमाए। गुर संगत गुर पूरन आस कराए। गुर संगत सोहँ शब्द स्वास स्वास जपाए। गुर संगत विच्च सद निवास रखाए। गुर संगत मानस जन्म रास कराए। गुर संगत अंगीकार करे जिउँ अंग लगाया अञ्जण, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दया कमाए।

अंगी संगी वड सूरा सर्बंगी। दरस दान गुरमुख साचे मंगी । महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी आत्म रंगी।

गुर संगत गुर पाया गहर सागर। गुर संगत गुरसिखां कराए निर्मल कर्म उजागर। गुर संगत गुर पूरा पार उतारे साचे घर। गुर संगत गुर अमृत मुख चवाए, एह काया माटी गागर। गुर संगत गुर परदा आपे पाए नाम चिट्टी चादर। गुर संगत माण दवाए, दर घर आया देवे आदर। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरसिखां पार उतारे जगत सागर।

गुर संगत हरि गुण गाए। प्रभ अबिनाशी दया कमाए। आप आपणे विच्च रिहा समाए। साचा शब्द आप लिखाए। गुरमुख कोई भुल्ल ना जाए। कलिजुग माया वेख डुल्ल ना जाए। पाप अन्धेरी वगे कल, गुरसिख हुल्ल ना जाए। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, विच्च मात कँवल फुल्ल लगाए।

गुरसिखां हरि माण दवा के। आवना जावणा लेखे ला के। पिछला लेखा आप चुका के। साचे मार्ग गुरसिख लगा के। सोहँ दान झोली पा के। भगत भगवान दरस दिखा के। गुर दर आओ दरस पाओ, घर जाओ खुशी मना के। भैणां भाईआ ताईं सुणाओ, पिछली भुल्ल चल बख्शाओ, निहकलंक कल आया जामा पा के। सोहँ शब्द ढोल वजाओ,

कलिजुग जीवां कन्न सुणाओ, अपणी रसना खेल करा के। शब्द अमृत घोल पिलाओ। साची दरगाह गुरसिख माण पाओ। आप तरे कुटम्ब तारया अवरे होर तराओ। पंज जेठ पए ठंड, वरे गंढु गुर घर मनाओ। महाराज शेर सिँघ सतिगुर साचा, कर दरस अमरा पद पाओ।

गुरसिख गुर साचे पाउणा। भरम भुलेखे विच्च ना आउणा। झूठा सहिंसा आत्म लाहुणा। कार विकार सर्ब तजाउणा। झूठा प्यार पंचां छुडाउणा। गुर चरन फेर सीस निवाउणा। साचा जगदीशर दर्शन पाउणा। एका छत्तर झूल्ले सीस, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वाली दो जहानां आप अखवाउणा।

गुरसिख उधरे पार, हरि दर्शन पा के। गुरसिख उधरे पार गुरसिखां जाए तार, हरि जोत प्रगटा के। पूरा करे विहार, कलिजुग जामा पा के। सच करे वरतार, कलिजुग झूठा भेख मिटा के। धीआं भैणां ना कोई करे वपार, आपे बख्शे सीस निवा के। ना कोई दीसे ठग्ग चोर यार, प्रभ जाए सर्ब खपा के। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जाए सतिजुग साचा मार्ग ला के।

गुरसिखां मन वधाईआ। आसां मनसा प्रभ पूर कराईआ। विच्च संसार दे वडयाईआ। साध संगत पहली माघ जो खुशीआं मनाईआ। धन्न धन्न धन्न गुरसिख आए गुर चरन, धन्न जणेदी माईआ। धन्न गुरसिख धन्न तेरी वडयाईआ। मिले माण भैणां भाईआ। धन्न गुरसिख आए दर्शन करन, मात कुक्खां सुफल कराईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किरपा कर गुरसिखां तोड़ निभाईआ।

गुरसिख तेरी निभे तोड़। चरन प्रीत एका जोड़। आप मिटाए काया कोहड़। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान साचा प्रभ, प्रभ साचे दी साची लोड़। साचा प्रभ सर्ब का दाता। साचा प्रभ सर्ब का गिआता। साचा प्रभ सर्ब का भराता। साचा प्रभ सर्ब का नाता। साचा प्रभ विरले कल किसे पछाता। साचा प्रभ गुरमुखां मिल्या पुरख बिधाता। साचा प्रभ आप मिटाए जातां पातां। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका रंग रंगाता।

गुरसिख गुर सज्जण बणाया। गुरसिखां गुर चरन धूड़ इशनान कराया। गुरसिखां चतुर सुजान, प्रभ मूढ़ो मूढ़ बणाया। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आपे होए सर्ब सहाया।

गुरसिख घर आपणे जाणा। साचा नाम ना मनों भुलाणा। साचा राख इक्क टिकाणा। प्रभ करे वक्ख, सोहँ शब्द जिस रसना गाणा। कलिजुग जीव जलाए जिउँ अगन कक्ख, एका लम्बू जोत लगाणा। गुरसिखां प्रभ लए रक्ख, आप आपणा सिर हत्थ टिकाणा। सृष्ट सबाई जाए मथ्थ, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवाना। (१ माघ २००६)

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

❊ ❊ ❊ ❊ ❊

हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ,
घर चल परमेसर आया।

हरिसंगत तेरा उह दवारा, जिस घर वसे सदा निरँकारा,
निरगुण आपणी दया कमाया।
हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ; घर चल परमेसर आया।

हरिसंगत तेरा उच्च मनारा, इक्को वेखे वेखणहारा,
दूजे नज़र किसे ना आया।
हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ; घर चल परमेसर आया।

हरिसंगत तेरा अगम्म प्यारा, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहरा,
नाता सतिजुग चरन जुड़ाया।
हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ; घर चल परमेसर आया।

हरिसंगत तेरा घर बारा, प्रभ नूं मिल्या धाम थारा,
सचखण्ड निवासी आपणा फेरा पाया।
हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ; घर चल परमेसर आया।

हरिसंगत तेरा सोहणा आसण, जिथ्थे सोहे पुरख अबिनाशन,
सनमुख हो के दरस वखाया।
हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ; घर चल परमेसर आया।

हरि संगत तेरी सोहणी सेज़ा, जोती जल्वा नूरी तेजा,
शब्दी राग सुणाया।
हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ; घर चल परमेसर आया।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,
किरपा निधान आपणी खेल रचाया।
हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ; घर चल परमेसर आया।

गुरमुखो मैनूं दरस दिखाओ, जुग जुग दी प्यास बुझाउ,
प्रेम प्रीती रंग चढ़ाया।

हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ; घर चल परमेसर आया।
गुरमुखो मैनूं दिउ दीदार, आपणे नाल सांझा करो प्यार,
वक्खरा रहण मैनूं कदे ना भाया।
हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ; घर चल परमेसर आया।

गुरमुखो मेरे नाल मिलाओ नैण, मैं तुहाढ्ढे अन्दर आया बहण,
लक्ख चुरासी जगत तजाया।
हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ; घर चल परमेसर आया।

मेरे नाल मिलाओ अक्ख, मैं आपणा भेत देवां दस्स,
अन्दरों पड़दा द्वैत चुकाया।
हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ; घर चल परमेसर आया।

मेरे नाल मिलाओ नेत्र, तुहाढ्ढा लहणा चुकावां छेकड़,
अग्गे लेखा मंगण कोई ना आया।
हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ; घर चल परमेसर आया।

जन भगतो मेरे नाल मिलाओ हत्थ, मैं उही पुरख समरथ,
जो जुग जुग वेस वटाया।
हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ; घर चल परमेसर आया।

सचखण्ड दवारिउँ आया नस्स, तुहाढ्ढे अन्दर जावां वस,
वसल इक्को यार कराया।
हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ; घर चल परमेसर आया।

मेरा नाता होवे पक्क, वेखयो प्यार करदयां ना जाणा थक्क,
थकावट पिछली दिआं गवाया।
हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ; घर चल परमेसर आया।

जे पिच्छे गोबिन्द गिआ छड्ड, हुण कदे ना होवां अड्ड,
वक्खरी धार ना कोई रखाया।
हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ; घर चल परमेसर आया।

जे बधक लिआ सद्द, मैं पार करके आया हद्द,
महिदूद हो के तुहाढ्ढे अंदर डेरा लाया।
हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ; घर चल परमेसर आया।

मैं खुशीआं नाल गावां तुहाढ्ढा जस, तुसां अगों मिलणा हस्स,
मैं आपणी हस्ती तुहाढ्ढी मसती विच्च रखाया।
हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ; घर चल परमेसर आया।

मार्ग इक्को देवां दस्स, जप तप कोई करना पए ना हठ,
बिन पढ़आं पार लंघाया।
हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ; घर चल परमेसर आया।

एथे ओथे लवां रक्ख, झोली पा के हकीकत हक़,
हाकम धुर दे देवां बणाया।
हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ; घर चल परमेसर आया।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर
प्रेम प्रीती अंदर तुहाढ्ढे अगे जाए ढठ्ठ,
आपणा बल ना कोई रखाया।
हरिसंगत तेरे दर्शन नूं ; घर चल परमेसर आया।

(१४ मध्घर २०२१ बि)

❇ ❇ ❇ ❇ ❇
❇ ❇ ❇ ❇ ❇